

22

ASHA ARCHIVES

2251

STANLEY HALL

॥ ५ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ मा कंठं यत्र बिले ब्रह्मा के उलो ध्या उदा भया. देविता म
 ह. यो संसार मा जो गुह्य कुरोह. ॥ म कृष्य कारणा गत्वा कसे कतत कल्या
 श्रीगणेशाय नमः ॥ मा कंठं ये य उवाच. ॥ यमु. लं परमं लोके सर्व रक्षा
 करं दशां ॥ यत्र कस्यचिदात्मा तंत नो ब्रुहि पीतां मद ॥ १ ॥ ॥ यमु. वच
 मति गुह्यं तं मं वि प्रसर्व भूतो पकारकं ॥ देवास्तु कवचं पुराणं तं कुरुष्व महा मुने
 को. यस्तो कुराक मला ई. प्राता गर्तु हवस. ॥ १ ॥ ॥ यमु. प्रा. ता ग कं. देवि प्र. यो संसार
 मा. स वै क का उदा र ह्या देवि को वचनं तु लो दि त्या. ॥ को. दे उ म क ह्या को. यो कुरा
 मे ले ति मि ला ई क हं दु हे महा मुने तुं नु ह. ॥ २ ॥

लो

॥ राम ॥
॥ १ ॥

॥ ६ ॥

हे महा मुने. क ता दो व भ त्या प्रथम ता भ म्या. शौ. ल पुत्रि हृत्. द्वितीय भ म्या वृ
 ह्म-चारिणी हृत्. तृतीय भ म्या चंद्र चं ड हृत्. चतुर्थ भ म्या कु ष्मांडी हृत्
 न. ॥ ३ ॥ हे महा मुने. पंचम भ म्या स्कंद मा ता हृत्. षष्ठ भ म्या का त्या यत्री
 प्रथमं शौ. ल पुत्री च द्वितीयं वृ ह्मचारिणी. ॥ तृतीयं चंद्र चं डेति कु ष्मा
 ङेति चतुर्थं क म्. ॥ ३ ॥ पंचमं स्कंद मातेति षष्ठं का त्या यत्रीति व. ॥ तप्त
 संकाल रात्री व महा गौरी ति चाष्ट मं. ॥ ४ ॥ तव संलिखि दा ता च तव दुर्गा
 प्रकीर्तिता. ॥ उक्ता राये ता नि ता मा नि ब्र ह्मणो व महा मता. ॥ ५ ॥

हृत्. म. म.

॥ मभ म्या

का ल रात्री हृत्. अष्ट म भ म्या गौ रि उं हृत्. ॥ ६ ॥ हे महा मुने. तव मभ म्या लिखि दा ता

॥ ५ ॥
॥ २ ॥

हृद॥ हे महा मुने मैले यो वदुर्गा को ताईति मिहै ई कहि सक्य भति प्राज्ञागमा
५॥ हे महा मुने जस तु व्यले यो कवच पाठिते गता तस तु व्य क न मुनि
को भय संग्राम सा स्रु को भय विष को भय वडा दुर्गा वद सा पाठि ई देवी का स्म
मि गला द ह्य मा ठ लुशु मध्ये गतो रणे ॥ विष मे दुर्ग मे चैव भयार्थ
शरण गताः ॥ ६ ॥ वते कां जाय तो किं चि द भुम रण संकटे ॥ ता पदं त
स्प प त्या मि शो क दु ख भ त हि ॥ ७ ॥ रणा गमा को हि को भय हुं दै त
हे महा मुने केरि तस तु व्य लाई संग्राम सा पाठि संकष हुवे त ॥ प्रभु भय
ति ह वै न म्मा प दा शो क दुः ख को भय पति हुवे तः ॥ ७ ॥ ॥ ६ ॥

॥ राम ॥
॥ २ ॥

हे महा मुने केरि जस तु व्य ले भक्ती ले संयुक्त भई सार ग ई त स तु
व्य का वृ द्धि हुं च मुं देवी जो कृ त त का प्रेत वा ह त क र पा ल हि देवी जो
यत्न भक्त्या स्म त रु तं ते वा ह्नि व जाय ते ॥ प्रेत संस्था तु चा मु रा वा
रा ही म हि व्य स माः ॥ ८ ॥ ऐं दी ग ज स मा ह्नि वै ह्नि वि ग रु स मा
हेश्वरी वृ था रु ठा को मारि शि वि वा ह त ॥ ९ ॥
हे महा मुने ऐं दि देवी भ म्मा दा ति मा च ह्मा की कृ त वै श्वरी देवि भ म्मा
ग रु मा ह्मा कि कृ त मा हेश्वरी देवी भ म्मा कृ त मा च ह्मा कृ त को मारि दे

॥ वा ह त ग मा कृ त ॥ ८ ॥

॥ दुर्गा ॥

॥ ३ ॥

विभवा मज्जरमा ह्या कि छेत् ॥ ६ ॥ लक्ष्मी देवि मज्जरमा सत गमा की
छेत् हरि प्रीया देविले पद्म हात माहि या कि छेत् ॥ ७ ॥ श्री भव्या की देवि
को से तो रूप धाराणा गरि वृषभ मा च ह्य कि छेत् ॥ १० ॥ धृष्टाराणी देवी

लक्ष्मी पद्मा सता देवी पद्म हस्ता ह प्रिया ॥ श्वेत रूप धरा देवी श्री वृष
वा हताः ॥ १० ॥ धृष्टाराणी हं स स रुठा सर्व भरण भूषिता ॥ ताता भरण शो
भाया ताता रत्नोपशो भरीताः ॥ ११ ॥ ॥ छ ॥

भवा हं स मा च ह्या की छेत् ॥ ८ ॥ ता देवी हस्त का सं पूर्ण गह गले न मरा मारि

॥ राम ॥
॥ ३ ॥

कले मारि मया मा
रमकी छेत् ॥

हे महा मुने इति देवी हस्त को धले युक्त मे रथ मा च ह्रीं रव चक्र गदा श
क्ति प्र कुशल मुशल याति हति यार भया की छेत् ॥ १२ ॥ खेत कभयो टो मरम

दृष्टं ते रथ मा रुठा देव्या क्रोध समा कुला ॥ शंख चक्र गदा शक्ति हस्त च
मुशला युधं ॥ १३ ॥ खेत कं ठो मदे चै व प र भुं पाश मे व च ॥ कंता युधं त्रि भुलं च
सारंगा युध मुक्त मीम ॥ १४ ॥ देवता हं दे हता शा य म क्ता ता म भया य च
धारयं ता युधा तिलं देवा ता च हिता य वै ॥ १५ ॥

भूल भयो सारंगा धनुष भयो सवे हति पारत पार गरि कत ॥ १६ ॥ देव हस्त को
दे हता श ग र्वा भक्त जन हस्त का भय ता श ग र्वा देवता का हित ति मित ॥ १७ ॥ छ

॥ पार ॥

॥ दुर्गा ॥
॥ ४ ॥

रत्नामहादेवत्यरूपमयाकाहेदेवीतिमि कनकमस्कारहे देवी केरि मासहाप्रदे
रवराक्रमगमाको कहनु मेरा सा मध्वैरः महाबलमयाको मतिः महागुहागगा
प्रमयाकी पति महाभयको नाशगमतिमिहो ॥ १५ ॥ हे देवि त्राहि त्राहि मेरा रक्षा

न मले सुमहारे देमहाघोरे पराक्रमे ॥ महाबले महोत्साय महाभयविता
शिवा ॥ १५ ॥ त्राहि मां देवी दुः प्रेक्ष्य शत्रूणां भयवद्भिति ॥ प्राच्यां रक्षतु मामेव
प्राग्नेया मग्निदेवता ॥ १६ ॥

॥ गरुडको नासगतिः शत्रूकनभयवह
व्यापला देवीतिमि हस्तले मेरा रक्षा गरः कलातलले भयाः ये ही देवीले पूर्व
दिशाको रक्षा गरः हे देवी, मग्निदेवताले प्राग्नेय दिशा रक्षा गरः ॥ १६ ॥ ॥ छ

॥ राम ॥

॥ ४ ॥

हे वाताहे देवी दक्षिणादिशाको रक्षा गरः हे वज्रधारिता मगमाका देवीले तै
र्मिदिशाको रक्षा गरः हे वातराती तामभयाकी देवीले पश्चिमदिशा देवी रक्षा
गरः हे मगवाहिनी तामभयाकी देवीले वायव्यदिशा देवि रक्षा गरः ॥ १७ ॥

दक्षिणे रक्षवा रही तै सत्वां वज्रधारिणी ॥ प्रतीच्यां वातराती देक्षे द्वा
यव्यां मगवाहिनी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं च्यां रक्षको मारि ईशान्यां शूलधारिणीः
ॐ ह्रीं ब्रह्माणि मे रक्षेदधत्था वैष्णवी तथा ॥ १८ ॥

॥ देवि विवाहनमया

किचा मुंडा देविले दक्षे दिशा देवि रक्षा गरः जया तामभयाका देवीले मूर्ध्नि
लती रवीर रक्षा गरः जय तामभयाकी देवीले पृष्ठभागको रक्षा गरः ॥ १८ ॥

॥ ५ ॥

हे प्रजिता तामगमाकी देवी लेवा मया श्वेकार रक्षा गर सुवराजिता मगमा
की देवी ले दक्षिणा पार्श्वकार रक्षा गर देवतिनि तामगमाकी देवी ले शिखा को
रक्षा गर उममा माता मगमाकी देवी ले भिरको रक्षा गर ॥ १८ ॥ हे कौमारी देवी
एवं दशदिशी दिशो रक्षे चा मुं उ शिखि वा हुता ॥ ज्या मे चा गत रक्षा
तु विजया वा नु पद्यत ॥ १९ ॥ प्रजिता वाम पार्श्वे तु दक्षिणे चा पराजिता
शिखा मे द्योति रक्ष दुर्गा मूर्द्धि व्यवा विता ॥ २० ॥
देवि रक्षा गर हे वैष्णविना मभया की देवी ले पृथ्वी रक्षा गर हे शूलधारिणी ताम
मभया की देवी ति मिले ईशा दशदिशा देवी रक्षा गर हे व्रजमायनी तामगमाकी देवी ले प्रा

काशदिशो देवि रक्षा गर ॥ २० ॥

॥ ५ ॥

हे मालाधारिणी मगमाकी देवी ति मिले ललाट मार रक्षा गर यथा श्वेती ताम
मगमाकी देवी ले प्राची भौ कार रक्षा गर त्रितेत्र तामगमाकी देवी ले प्राची
भौ का मध्य तु कार रक्षा गर यम घंटा तामगमाकी देवी ले ताशिका को रक्षा गर
मालाधारि ललाटे च भ्रुवोरक्ष दशविती ॥ त्रितेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यम
घंटा च ताशिके ॥ २१ ॥ शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयो द्वा र्वा विती ॥
कवेलौ कारक्षे करामूलै तु शं करी ॥ २२ ॥
हे प्राचा को रक्षा गर द्वा र्वा विनि तामगमाकी देवी ले कावको रक्षा गर काले
का तामगमाकी देवी ले कपाल को रक्षा गर साकभरिता मगमाकी देवी ले क

र ॥ २१ ॥
र ॥ २२ ॥

॥ दुर्गा ॥
॥ ६ ॥

सुगंधा नाम गंगा की देवी ले तालिका को रक्षा गर चंद्रिका नाम गंगा की देवी ले व
ठ को रक्षा गर मृत कल नाम गंगा की देवी ले मृधर को रक्षा गर सरस्व
ती नाम गंगा की देवी ले जिभा को रक्षा गर ॥ १३ ॥ को मारिता नाम गंगा की देवी ले दात
नाशिका यां सुगंधा च उर रोखे च चंद्रिका ॥ मृधरे च मृत कला जि
हा यां च सरस्वती ॥ १३ ॥ दंता रक्षा तु को मारिकां मध्ये तु चंडी का ॥
चंद्रिका चित्र चंद्रा च महासाया च तालु के ॥ १४ ॥ को रक्षा गर चंद्रिका
मा देवी ले गला को रक्षा गर चित्रं गला मा देवी ले घाट को रक्षा गर माहा
माया नाम गंगा की देवी ले तालु को रक्षा गर ॥ १४ ॥ ॥ ६ ॥

॥ राम ॥

॥ ६ ॥

भद्र काली नाम देवी ले ग्रीवा को रक्षा गर धनुर्धरा नाम देवी ले पृष्ठ को रक्षा
गर कामाक्षी नाम गंगा की देवी ले चित्रं नाम को रक्षा गर मंगल नाम गंगा की
देवी ले वारिण को रक्षा गर ॥ १५ ॥ तिल ग्रीवा नाम गंगा की देवी ले कंठ का वाराही
कामाक्षी चित्र कंठ नाम देवी ले सर्व मंगला ॥ ग्रीवा यां भद्र काली च
पृष्ठ वं शोध कुर्वरी ॥ १५ ॥ तिल ग्रीवा वही कंठ तलिकां तल कुर्वरी
कंदयोः खड्गिनी रक्षो ह्वा च मेव ज्ञा धारिणी ॥ १६ ॥ रक्षा गर तालु
कुर्वरी नाम गंगा की देवी ले तलिका को रक्षा गर खड्गिनी नाम गंगा की देवी ले
कांध को रक्षा गर वज्र धारिणी नाम गंगा की देवी ले वचन को रक्षा गर ॥ १६ ॥

॥ दुर्गा ॥

॥ ७ ॥

दंडिनी तामगमा की देवी ले हात को रक्षा गर ॥ मंत्रिका तामगमा की देवी ले
गुलिका को रक्षा गर ॥ भूलेश्वरि तामगमा की देवी ले नाथ को रक्षा गर ॥ तलेश्वर
रिता तामगमा की देवी ले कोषा को रक्षा गर ॥ १७ ॥ महादेवि तामगमा की देवी ले

हस्त यो दण्डिनी रक्ष देवि कांचा गुली छच ॥ तथा त भूलेश्वरि रक्षा
कुक्षौ रक्षां तले श्वरी ॥ १८ ॥ तनोरक्षे तमहादेवी मठ लोक विनाशिनी ॥

हृदये ललिता देवि हृदये भूलधारिणी ॥ १९ ॥

त को रक्षा गर ॥ केरि मठ शोक नाश गार्गी ललिता तामगमा की देवी ले हृद
य को रक्षा गर ॥ भूलधारिणी तामगमा की देवी ले पेठ को रक्षा गर ॥ २० ॥

॥ ताम ॥

॥ ७ ॥

कामिनी तामगमा की देवी ले तामि को रक्षा गर ॥ गृह्यश्वरि तामगमा की देवी ले रा
ह को रक्षा गर ॥ पूतना तामगमा की देवी ले काम को रक्षा गर ॥ महिष बाहिनी
देवी ले गुरु को रक्षा गर ॥ २१ ॥ भगवति तामगमा की देवी ले कटि को रक्षा गर

तामैव कामिनी रक्षे गुरुं गुरुं श्वरी तथा ॥ पूतना कामिकाक्षि

रे गुरु दे महिष बाहिनी ॥ २२ ॥ कांक्षां भगवती रक्षे सा नृती वीर्ये वा

शीती ॥ जंघे महावलारक्षे सर्व काम प्रदायिनी ॥ ३० ॥

मगमा की देवी ले जंघा को रक्षा गर ॥ महावल तामगमा की देवी ले सर्व काम
म को फल दिनाय तामगमा की देवी ले साव को रक्षा गर ॥ ३० ॥

॥ रविदवा सिनी ताम ॥

॥ दुर्गा ॥

॥ ८ ॥

तारसिंहतामसगमाकीदेवीलेगुल्फकोरक्षागरतेजसीतामसगमाकीदेवीले
दकोरक्षागरश्रीतामसगमाकीदेवीलेगेशकपुंगुलाकोरक्षागरधल्ल
वासितामसगमाकीदेवीलेपातितमायाकोरक्षागर॥३९॥ करालिनीतामसग

गुल्फयोनातारसिंहचपाददष्टेचतेजसि॥ पादांगुलिषुश्रावक्षेमादा
धल्लवादिनी॥३९॥ दंष्ट्राकरालिनीरक्षेकेशाश्वैर्दंष्ट्रकेशिनी॥ ते
मकूटकोमारीचंचवागीश्वरीतथा॥३२॥ ॥ माकीदेविलेदंतकोरक्षागर
दंष्ट्रकेशिनीतामसगमाकीदेवीलेकेशकोरक्षागरकोमारीतामसगमाकीदे
वीलेतेमरोमकाक्षागरवागीश्वरीतामसगमाकीदेवीलेद्वालाकोरक्षागर

॥ ८ ॥ ॥ ३२ ॥

॥ तम ॥

॥ ८ ॥

पद्मावतीतामसगमाकीदेवीलेपद्मकोरक्षागर॥ चूडामणिताम
सगमाकीदेवीलेकंफकोरक्षागर॥ ज्वालामुखीतामसमयदिमादे
पद्मावतिपद्मकीलेकफेचूडामणिसत्था॥ ज्वालामुखि
नखाज्वालासमिद्रासर्वसंधिषु॥३३॥ ॥ हू

वीसंपूर्णसंधिकोरक्षागरफेरीतावकोपतिरक्षागर॥३३॥
प्रह्लाणीतामसगमाकीदेवीलेभुक्तकोरक्षागरद्वेवसेगितामसगमाकीदेविले

॥ दुर्गा ॥

॥ ५ ॥

छाया को रक्षा गर धर्म धारिणी ताम्रगंगा की देवी ले। म्रहंकार का मत को बु
द्विको धर्म को रक्षा गर ॥ ३४ ॥ वज्र दात मालिका की देवी ले प्राण को रक्षा

भुक्तं वृक्षादि मे रक्षेच्छायां द्रव्ये रक्षितथा ॥ म्रहंकारं मतो बु
द्विरक्षं मे धर्म धारिणी ॥ ३४ ॥ प्राणो पातौ तथा व्याप्तौ ॥ ३५ ॥
दातं च समानकं ॥ वज्र दाता च मे रक्षेत्प्राण कल्याण शोभते

त को रक्षा दात को समान को संपूर्ण प्राण को कल्याण रक्षा ति मि गत ॥ ३५ ॥

॥ राम ॥

॥ ५ ॥

हे तारयणी देवी तिमिले रस मारूप गंध मास त्वमु ह्यरा मात गुण मारक्षा
तः ॥ ३६ ॥ धारा दी देवी ले प्राण को रक्षा गर वैष्णवी ताम्रगंगा की देवी धर्म को

रसे रूपे च गंधे च शब्द स्पर्शे च योगिनी सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्ना
रायणी सदा ॥ ३६ ॥ प्रायुरक्षेत्तथा राक्षिधर्मे रक्षत वैष्णवी ॥ यशं की
र्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥ ३७ ॥ ॥ छ ॥

रक्षा गर लक्ष्मी ताम्रगंगा की देवी ले धन को रक्षा गर च चक्रिणी ताम्र
गंगा की देवी ले जस को कीर्ति को विद्या को रक्षा गर ॥ ३७ ॥ छ

॥ दुर्गा ॥

॥ १० ॥

ई-द्राणी तामगमा की देवी ले गोत्र को रक्षा गर चंडिका तामगमा की देवी ले
पशुपंथि को रक्षा गर महालक्ष्मी तामगमा की देवी ले पुत्र को रक्षा गर ॥ ३५ ॥

गोत्र पिंडारि मे रहे पशु मे रहे चंडिके पुत्रा तरक्षु महालक्ष्मी
भायरी रक्षु मे रवी ॥ ३६ ॥ धने श्वरि धनं रहे को मारि कलकास
था ॥ राज दारे महालक्ष्मी विजया सर्व संधि सु ॥ ३७ ॥ ॥ ६ ॥

विना तामगमा की देवी ले भायरी को रक्षा गर ॥ ३८ ॥ मने श्वरी तामगमा की देवी
ले धन को रक्षा गर को मारी तामगमा की देवी ले कंठा को रक्षा गर जयलक्ष्मी ॥ ३९ ॥

क्ष्मी नाम

॥ राम ॥

॥ १० ॥

गमा की देवी ले राज दार मार रक्षा गर विजया तामगमा की देवी ले सर्व
संधि को रक्षा गर ॥ ४० ॥ हे म महा मुने पुद्गल वसः सर्व को रक्षा गर्या सर्वे ला
ई पुराण दिव्या योर्त्तम भया को क वच रहस्य ति मि छेई क ह्या ॥ ४१ ॥ वा
सर्व रक्षा करं पुराणं क वचं सर्व दज पेत् ॥ रहस्यं परमं भक्त्या त
वम यो दितं श्रुतम् ॥ ४२ ॥ पंथा न सु पंथा रक्षु मां गि ह्ये म करि
तथा ॥ राज दारे तथा लक्ष्मी विजया सर्व त स्थित ॥ ४३ ॥ पु मा हि उ दा
मा रक्षा गर महालक्ष्मी तामगमा की देवी ले राज दार मा न दार रक्षा गर विज

या तामगमा की देवी ले सर्व श्रदा
रक्षा गर ॥ ४४ ॥

॥ दुर्गा ॥

॥ ११ ॥

हे महा मुने यो कवचं कस्तो हो भस्मा जस्मले पाठगर्ह तत्काराति तैलोक
मापुजा दुंदुभ्यो कवचं देवता कन पति दुर्ध्वमिह तत्कारागले यो कवच
त्रैलोक्ये तु भवेत्सु संकवचं तावतो कृमात् ॥ इदं तु देव्या कवचं देवा
तामपि उर्ध्वमं ॥ ४६ ॥ यपठेत्प्रायतो नित्यं त्रिसंध्यं श्रधया चितं
देविकला भवेत्तस्मै त्रैलोक्ये पता जिता ॥ ४७ ॥ ॥ ६ ॥

पाठगर्ह ॥ ४६ ॥ जो कोहि मनुष्य ले यो देविको कवच एक चित्त संगति तैलोक
ध्यामा पाठगर्ह जस्मनुष्य ले तैलोक लाई जितला ॥ ४७ ॥ ॥ ६ ॥

॥ राम ॥

॥ १२ ॥

जस्मनुष्य ले तिस्य पाठगर्हा तस्मनुष्य कनस्थाय वरका. सर्वका. बाघकां
भालुका. संपूर्ण विषको भय दुंदैत. पराङ्का मंत्रयंचको भय पति हवेन
जीवेद्वर्ष सतं साग मत्स्य मत्सु विवर्जिता ॥ त्रयं तिव्या धय ॥ स
वैलुता विष्कोठका दय ॥ ४८ ॥ स्थावर जंगमं व्यापि वृत्ति मंचा पि
यद्विषं ॥ प्रभिचारानि सर्वाणि मंत्रयंचाणि भूतले ॥ ४९ ॥
४८ ॥ जस्मनुष्य ले पाठगर्हा तस्मनुष्य को शय वर्ष प्राय दुंदुभ्य मत्सु
दुंदैत. संपूर्ण लुता विष्कोठका प्रादि रोग पति ता भय ता दुंदु ॥ ४९ ॥

॥ दुर्गा ॥

॥ १३ ॥

यत्तामनुष्यलाई पृथिवी मारहत्याप्राकाश मारहत्या कुल माभया को देश
माभया को शाकिनी शाकिनी को भय हवैत ॥ ५० ॥ अंतरि ह्ये चारा घोर शाकिनी

भूचराये चरा श्रेव कुल जाचो मदेशिका ॥ सहजा कुल जा माला

शाकिनी शाकिनी ताथा ॥ ५० ॥ अंतरि ह्ये चारा घोर शाकिनी

महाबला ॥ ग्रहभूत पिशाचा श्रय ह्ये गंधर्व राक्षसाः ॥ ५१ ॥

घोरा शाकिनी ग्रहभूत पिशाचा श्रय ह्ये गंधर्व राक्षसाः पतित्य समुत्पलाई भ
य हवैत ॥ ५१ ॥ ब्रह्मराक्षस भयो न वेताल भयो कुष्मांड भैरव भयो अंतर

॥ राम ॥

॥ १३ ॥

वैदुष्य हस्तयो कवच जस्मनुष्यले हृदये धारणा गमा को छ जस्मनुष्यलाई
देखत विरि के भागी जां छ ॥ ५२ ॥ जस्मनुष्यले यो कवच कंठ मा धारणा गमा को
छ तस्मनुष्य कतयो संसार मा श्रेष्ठ होला उं छ ॥ ५३ ॥ यो सप्तशक्ति चंडि जो छ तप

ब्रह्मराक्षस वेताल कुष्मांड भैरव दय ॥ तदं प्रति दर्शना तत्प कवचे ह

दिसं स्थिते ॥ ५२ ॥ माने प्रति भवे दान्यं ते जो बुद्धि करं परां ॥ यशसा व

हुते सोपि कीर्ति मंडित भूतले ॥ ५३ ॥ जपत्पप्रशक्ति चंडि कृत्वा तु कवचं प्र

राः

हिले कवच को पाठ गुरु तप पाछे वाट चंडि पाठ गुरु जाहा संमयो पृथिवी प
र्वत वन छ ताहा ताहा समुत्पलाई प्रातं दहुं छ ॥ ५४ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ दुर्गा ॥

॥ १४ ॥

केरिजाहासंमयोऽधिवीरहं हं ताहासंमयुत्र योत्रलेसंयुक्तमैसंयततिवभी
विमरहं हं-देहकोआपकिदेवतालेपतिपाई नडाकुउलमपदवीपाउं हं ॥ ५५ ॥
यावदुमंडलंधर्तैसडोलवतकातत ॥ ५६ ॥ तावतिपूतिमेदिप्रांसं तति
पुत्रयोत्रकी ॥ देहांतेपरमं स्थातं यत्सुरैरपि दुर्लभं ॥ ५५ ॥ प्राप्नोतिप्रह
ओतित्यं महाप्रसादाया प्रसादतः ॥ स्मात्सर्वप्रयत्नेतकवचं का मंदं
तुमे ॥ ५६ ॥ इति श्रीहरिहरब्रह्मावितं देव्या कवचं समाप्तः ॥ १ ॥
महाप्रसादात्तमगमाकी इति श्रीहरिहरब्रह्मावितं देव्या कवचं समाप्तः ॥ १ ॥
तसंगयो कवचसिद्धिगर्भ ॥ ५६ ॥ इति श्रीहरिहरब्रह्मावितं देव्या कवचं समाप्तः ॥ १ ॥

॥ राम ॥

॥ १४ ॥

तवत्रयिभारसुतिगर्भतः हे जयंति हे संगता हे कलनीयधे तिमाचरामि
नमस्कारः ॥ १ ॥ हे देवी तिमिकली कौभया मधुकैठभदैत्यकतवधगर्भा
उं तमश्रुतिकाये ॥ जयंति संगता काली भद्रकालिक कालिनी ॥ दुर्गा
भमाशिवध्यात्रिद्याहास्यधातमोस्तुते ॥ १ ॥ मधुकैठभवेद्राज्यं विधात्रि
वरदेतम ॥ रूपं देहि जयं देहि यद्रो देहि द्विषो जहि ॥ २ ॥ महिषासु
रतिर्न स विधात्रिवरदेतमः ॥ रूपं देहि ॥ ३ ॥ ॥ हे नारायण विधाता क
तपति वरदा तदिदं यत्सातिमिदेविलेहामिह रुकनपति वरदा तदिह ॥ रूपं वति
देउ ॥ शत्रुकोपतिताशगदिदेउ ॥ २ ॥ हे देवी तिमिकली कौभया महीषासुरदैत्ये

कौभया महीषासुरदैत्ये

॥५॥

॥१५॥

केरि देव लोक वरदा त दिव्या यस्ता तिमि देवी कनक स्कार मलाई पति रूप देउ
केरि मेरा गुण गुता राग रि देउ ॥३॥ हे देवी केरि तिमि कस्तो हो भव्या रक्त वीज वध
गत्याः केरि चंड मुंड ता राग त्या यस्ता देवी ले मकन रूप जय जस शत्रु को ता रा
रक्त वीज वधे देवी चंड मुंड विद्या शिनी ॥ रूप देहि ॥ ४ ॥ भुंभ श्रैति भुंभ
श्रद्धा माक्षस्य च मर्दिनी ॥ ५ ॥

॥ गरि देउ ॥ ४ ॥ हे देवी

केरि तिमि कस्तो हो भव्या भुमति भुमदैत्य कनक वध रक्त वध गत्याः केरि धूम्राक्ष ताम
गत्याः कादैत्य कनक मार्या यस्ता हे देवी तिमि ले मलाई रूप जस जय देउ केरि मेरा गुण

नयनि काग रि देउ ॥ ५ ॥

॥ राम ॥
॥ १५ ॥

हे देवी केरि तिमि कस्तो हो भव्या ॥ सवें देव ताले पति तिमि चरण तल क मल को पूरण
मगमा की यस्तो तिमि देवी ले मलाई सौभाग्य कत देउ रूप जय जस पति देउ ॥ ६ ॥ हे
देवि तिमो रूप को पति चरित्र को पति चरित्र को पति समूही सकुं केत यस्ता श्रविति
वंमिता प्रिं पुगे देवि सौभाग्य दायति ॥ रूप देहि ॥ ६ ॥ लुके प्रोभक्ति पूर्व
लां चंड के दया धिना शिनी ॥ रूप देहि ॥ ७ ॥ मुचि त रूप वरिते चंड के
प्रणता ये मे ॥ रूप देहि ॥ ८ ॥

॥ मिले मलाई रूप पति जस पति देउ ॥ ९ ॥

हे देवी तिमो रूप को पति चरित्र को पति चरित्र को पति समूही सकुं केत य
स्ता लाई श्रविति मिले मलाई रूप पति जस पति देउ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥

॥५॥

॥५६॥

हे देवितिमिकली हौ भव्या भक्ति लेत मित्र भया का मातिले को पाप का राक्षस गरी
यत्ता पर मे भविले मलाई रूप पति. जय जय पति देउ ॥८॥ जस मुख लेयु
हु माचंडि को पूजा गरि जं छ. तस मुख का दातु को गदा हं छ. यत्ता देवी ले म
ठ ते भयः सब दा भव्या चंडि के दुरिता वंदे ॥ रूप देहि ॥९॥ चंडि के सत
ते पुद्गे च व पद्मोति शक्ती च ॥ रूप देहि ॥१०॥ देहि सौ भाग्य मारो गं देहि
देवि परं सुख ॥ रूप देहि ॥११॥ विदेहि द्विषता राक्ष विदेही बल मुख के
लाई रूप पति जय जय पति देउ ॥१२॥ हे देवि मलाई सौ भाग्य देउ, प्रारोग्य
गर मुख पति देउ. रूप जय जय पति देउ ॥१३॥ हे देवि मेरा शत्रु को नास गर के

सिंह गरी रूप पति देउ

॥११॥

॥१२॥

गरी देउ. रूप पति जय पति जय पति देउ ॥१३॥ हे देवी तिमिकली हौ भव्या वत्स
को दैत्य हर का शिर मा को मणि. तमा चरणा मा कय लो ईश्वरी ले मलाई रूप
हि देवी तिमिकली हौ भव्या मनुष्य लाई विद्या दित्या जस पति दिला उन्माह
सुर सुर शिरो तन निरुद्ध चरणां वि के ॥ रूप देहि ॥१४॥ विद्या वंतं य स
वंतं लक्ष्मी वंतं जतं पु ॥ रूप देहि ॥१५॥ ॥ प देउ जय क त देउ. जस पति
देउ ॥१६॥ हे देवितिमिकली हौ भव्या मनुष्य लाई विद्या दित्या जस पति दी
उन्माह लक्ष्मी पति दित्या. यत्ता पर मे भविले मलाई रूप जय जय पति देउ ॥१७॥

॥६॥

॥१॥

हे देवी तिमिकली हो भव्या वशवशा प्रचंड भया का दैत्य को प्रहंकार ताका गार्गीय
लाचंडितिमिले मलाई रूप कत जय कत जय कत देउ ॥१५॥ हे देवी तिमिकली हो
भव्या चारहात भया कि केरियांच मुख भया की केरि सवै देउ ॥१६॥ हे देवी तिमि
प्रचण्ड दैत्य दम्ये चंडिके प्रणता यमे ॥ रूप देहि ॥१५॥ चतुर्भुजे चतु
र्वक्त्रे संस्तुते परमेश्वरी ॥ रूप देहि ॥१६॥ कतेन संस्तुता देवि शश्वत्
स्वा सदां विको ॥ रूप देहि ॥१७॥ ॥ कली हो भव्या कली ले पति लुति गमा
कि फेरी सदैव भक्त जन लाई वर दिर हत्या यत्ना विकले मलाई रूप कत जय क

वज्रसूत्र १०

॥१॥

॥१॥

हे देवी तिमिकली हो भव्याई इले पति भक्ति पूर्वक गरी पूजा गमा की यत्नाप
रमेश्वरी ले रूप कत जय कत जय कत देउ ॥१८॥ हे देवी तिमिकली हो भव्या
वशवशा प्रचंड भया का दैत्य हर कत संहार गार्गीय स्ता जगदीश्वर ले मलाई रूप
ईद्वारा पति सदावा पूजीते परमेश्वरी ॥ रूप देही ॥१८॥ देवि प्रचं
उदोदय विनाशिता ॥ रूप देहि ॥१९॥ देवि दैत्य जतो दास दत्त तदोद
याविका ॥ रूप देहि ॥२०॥ ॥ पकत जय कत स कत देउ ॥१९॥ हे देवि तिमि
मी कली हो भव्या दैत्य सवै का संहार गरी भक्त जन कत नानंद दिना यत्नाति
मी मुं बिकाले मलाई रूप कत जय कत ॥ जय कत देउ ॥२०॥ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ दुर्गा ॥

॥ १८ ॥

हे देवी तिमि कलौ को भव्या; प्रति सुंदरि सुस्त्री को लख पहि ई संसार को उद्धार
गर्भसमुद्र वाट उत्पति भया की यस्ता महा माया ले मलाई रक्षा गरा ॥ १८ ॥
यत्नी मनोरमां देवि मने वृत्ती लु सारि रीता ॥ तारि रानी दुर्गा संसार सा
गर स्य कुलो द्रवा ॥ १९ ॥ ईदं सो व पाठित्वा तु महा सोत्रं व ठे वरः स तु
स प्र सति संख्या वर मा प्रोति सं व द ॥ २० ॥ ईत्यर्गला लुति समाप्तः
जो मनुष्य ले यो सोत्र मही कत महा सोत्र पाठ गली तस्म लुष्य कत इय प्रका
र को व पाठला फे रिधत ध्याय पति हो ला ॥ २१ ॥ ईति अर्गला लुति भाषा समा

॥ राम ॥

॥ १८ ॥

प्र

हे देवि तिमि कलौ को भव्या शुद्ध तात भया काम भूत भविष्य वर्तमान
गर्भजात्या शुद्ध चंद्र मा सीर मा धार ता ग मा कि ए लाई श्वरिका जलानुः

श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमः श्रुं ठिका ये ॥ विशुद्ध तात देहाय त्रिवे
द दिव्य चक्षुषे ॥ श्री य प्राप्ति मिताये मनः सो मोर्द्ध धारि रानी ॥

१ ॥ सर्व मैत दिनाय राह मंत्रा नामा पिकिल कं ॥ जो पी धु म म वा प्रो
तिस त तं जाय त मरं ॥ २ ॥ सिध्य पुचा ट ना दि नि व स्तु ति सकलां त्पि ॥

अले पाठ ग क्त तत्का कला न दुं छ ॥ १ ॥ यो क व च क तो हो न त्या मंत्र ले जु क भया
को किल क जो को हि मनुष्य ले पाठ गली तस्म लुष्य कत जो सिद्धि दुं छ ॥ २ ॥ यो दे

॥ दुर्गा ॥

॥ १४ ॥

विकाकीलक कल्लो हो भय्या उच्चाटनादियो कर्म पति जो कसो सवैसी दुहुं दुःख
मपूरी काम मा जो कोहि मनुष्य लेयो कीलक ले सुति गर्हत को काम सवैसी दुहुं
हुं ॥ ३ ॥ यो किलक मा मंत्र पति के न प्रौषधी पति के न विना जाये ते पाठ

यतेन सुवतां देवि स्तोत्रं देव सिद्धति ॥ ३ ॥ त मंत्रं तौषधं दंतत्रयं किं
चित् दधि विद्यते ॥ विना जाये न सिद्धीति सर्वं मुच्चाटनादिकं ॥ ४ ॥ सम
ग्रास्य पिसिद्धं तिलो कसं कामि मा हरे कृत्वा तिमंत्रया मास सर्वमेव
तसं सयः ॥ ५ ॥ ॥ गरि सवै उच्चाटनादिसिद्धि दुहुं ॥ ४ ॥ जो मनुष्य
लेयो पाठति तमहिना संमर्गला तत्कतयो संसार को केहि संकार स्वैनः पेरिते

तसवै सिद्धि पति पाठः ५

॥ राम ॥

॥ १५ ॥

मनुष्य लेयो चंडिका को स्तोत्रं गुप्तराख तु कपे के उत कहनु यो वडा पुराण ले प्रा
प्रभया को छः अरु मंत्र केहि केत ॥ ६ ॥ जस मनुष्य लेयो पाठति सगल अथवा कु

स्तोत्र वै चंडिका यतु तं गुह्यं चरु शतम् ॥ समाप्नोति सुपुत्रा पतंगं य
था वन्निमन्त्रितो ॥ ६ ॥ लोपिष्टे मम वाप्नोति सततं जायत पुत्रं ॥

कुक्ष्या या वा चतुर्दशमा मष्टं म्मा वा समाहितः ॥ ७ ॥ ॥ ६ ॥

क्षपक्षका चतुर्दशिका दित भयो अथवा कुक्षपक्षका अष्टमिका दित मा
ठगली तस मनुष्य का सरिर कुल दुहुं प्राप्ति दुहुं लाभ पति दुहुं सर्व काम पति

॥ ७ ॥
अहुं ॥ ७ ॥

॥ दुर्गा ॥

॥ २० ॥

यो किलकः सो हो भवायेकचिद्गारिचतुर्दसिभयोवा. मृधवा मृधमिकादि
न मा जस्मनुष्यले पाठ गार्ह तस्मनुष्यले दिनपतिलितपती सकृदाहुंछ फेरि
तेकनसिद्धि पतिहुंछ भनियोह पमा हा देवको वचन छ ॥ ८ ॥ यो कीलक जो मा

ददति प्रतिगृह्णाति तास्य थै वा प्रशिष्यति ॥ इत्थं रूपेण किलेन

माहादेवेन कीलितं ॥ ८ ॥ योतिः किला विधाते न मंत्रं न पतिस (

सुरं ॥ स सिध स गरा सो पि गंधर्वे जायते वने ॥ ६ ॥ ॥ छ ॥

तिसलेनिकटक मे पाठ गार्ह सिद्ध ग न पतिते सै लाई भंनु गंधर्व (
 गरा पतिते सै मनुष्य लाई भंनुः ॥ ६ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ राम ॥

२०

जस्मातिप्ले विधान गारि पाठ गार्ह तस्मनुष्य लाई कैले पति भय दुंदै

न. ममापक्षि मोक्षक तदुं ॥ १० ॥ जो हाति जन मनुष्यले यो किलक वि

तचैवं पठत तस्मभयं कापि विन जायते ॥ ताल्य मृधु वसं ॥ ११ ॥

यांति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १० ॥ ताल्या प्रारभ्य कवीत ॥ ११ ॥

श्रु कवी गोविन्दस्यति ॥ ततो हा त्वै वसं मनमिदं प्रारभ्यते ॥

चार गारि पाठ गार्ह मनुष्य लाई सिद्धि हुंछ. संपति पाई छ ॥ ११ ॥

॥ दुर्गा ॥

२९

यो देवी कस्तूरी हो भक्त्या संपूर्णा संसार मा मल र्ही सो भाग्य दे भव्य
सुषदिन्या हुं छुं तत्कारन मनुष्य ले निश्चय गारि तिस्र पाठ गनु ॥ १२ ॥

सो भाग्यादिषु यत्कीर्त्तय दृश्यते ललना जने ॥ तत्सर्वं त्वत्प्रसा

देव जाप्य माला प्रदं शुभ ॥ १३ ॥ शनैः सुजाप्य मा नो मिं लोः त्रसं

पति ह्ये कै ॥ भवत्यवस मग्रा धिततः प्रारभ्यते वतः ॥ १४ ॥

जो को हि मनुष्य ले देवि को जाप पाठ गई तस्मिन्नुष्य कन कै ले पति भय हुं दे

त ते तस्मिन्नुष्य कन मृत्यु मृत्यु पति हुं दे त के रिम सा पति मोक्ष हुं छुं ॥ १५ ॥

॥ राम ॥

२९

(५)

॥ दुर्गा ॥

२२

इति देवि का प्रसाद ले वडो रे श्रव्ये पाते हुं छुं के रि भाग्य मा नि पति हुं छुं
के रि रोग पति हुं दे त के रि सत्र को ना स पति हुं छुं ॥ के रि मन्मा पा छि मोक्ष

ये स्वयं त्वत्प्रसादे तसौ भाग्य रोगां पदः ॥ शत्रु हानि

परो मोक्ष सुपे ते सा त किं जने ॥ १६ ॥ ॥ ॐ ॥

इति भगवत्मा कीलकं संपूर्ण समाप्त ॥ ॥ शुभम् ॥

हुं छुं के रि यत्सा मनुष्य लाई देवि म्र प सरा ह र पति सु ति ग ई तः ॥ १७ ॥ ॥ ॐ ॥

इति कीलकं समाप्तम् ॥ ॥ शुभम् सु सर्व दा शुभम् ॥ ॥ ॐ ॥

॥ राम ॥

२२

2.259
ASMA ARCHIVES

ASMA ARCHIVES